
पहला पृष्ठ

नैतिकता व्यावहारिक धर्म है और धर्म है प्रेम। ईश्वर के बिना नैतिकता पतवार-रहित नौका के
सैद्धान्तिक नैतिकता। धर्म के बिना नैतिकता समान है।
जड़-रहित वृक्ष या बालू पर बने घर की भाँति है। ऋहस्वामी शिवानन्द
नैतिकता का आधार होना चाहिए ऋहईश्वर के प्रति

उपनिषद्-सुधा बिन्दु

तद्धैषां विजज्ञौ तेभ्यो ह प्रादुर्बभुव तन्न व्यजानत यक्ष के रूप में प्रकट हुए। देवगण ब्रह्म को नहीं पहचान
किमिदं यक्षमिति ॥२॥ पाये।

ब्रह्म ने देवों के अभिमान को जान लिया और
(उनका अभिमान नष्ट करने के लिए) वह उनके सामने

ब्रह्मचर्य-साधना :

ब्रह्मचर्य की महिमा

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

ब्रह्मचर्य का अर्थ

ब्रह्मचर्य का शब्दार्थ हैहहवह आचार जिससे ब्रह्म अथवा आत्मा का साक्षात्कार प्राप्त होता है। इसका अर्थ हैहहवीर्य पर अधिकार, वेदों का अध्ययन तथा भगवद्-चिन्तन। ब्रह्मचर्य का पारिभाषिक अर्थ हैहहआत्म-संयम, विशेष रूप से जननेन्द्रिय पर अधिकार अथवा पूर्ण नियन्त्रण अथवा विचार, वाणी तथा कर्म में कामुकता से मुक्ति। पूर्ण जितेन्द्रियता केवल मैथुन से ही नहीं अपितु स्व-रत्यात्मक प्रकटीकरण, हस्त-मैथुन, समलिंगकामी क्रियाएँ तथा यौन-विकृत आचरणों से अलग रहना है। इसके अतिरिक्त इसमें काम-विषयक कल्पनाओं तथा कामोद्दीपक दिवास्वप्न में निरति से चिरस्थायी निवृत्ति का भी समावेश होना चाहिए। सभी प्रकार की यौन-विकृतियों तथा हस्त-मैथुन, गुदा-मैथुन आदि विविध प्रकार की बुरी आदतों का पूर्ण रूप से मूलोच्छेदन करना चाहिए। वे स्नायु-तन्त्र में पूर्ण खराबी तथा अपरिमेय दुःख उत्पन्न करते हैं।

ब्रह्मचर्य विचार, वाणी तथा कर्म की पवित्रता है। ब्रह्मचर्य अविवाहित जीवन तथा इन्द्रिय-निग्रह है। ब्रह्मचर्य अविवाहित जीवन-यापन का व्रत है। ब्रह्मचर्य केवल कुँआरापन नहीं है। इसमें जननेन्द्रिय का ही नहीं, वरन् विचार, वाणी तथा कर्म से अन्य समस्त इन्द्रियों का निग्रह समाविष्ट है। यह ब्रह्मचर्य की व्यापक व्याख्या है। निर्वाण-धाम का द्वार अखण्ड

ब्रह्मचर्य है। पूर्ण ब्रह्मचर्य स्वर्गिक आनन्द-राज्य के द्वार खोलने की सर्वकुंजी है। परम शान्ति के धाम का मार्ग ब्रह्मचर्य से ही प्रारम्भ होता है।

काम-वासना तथा कामुक विचारों से सर्वथा मुक्त रहना ही ब्रह्मचर्य है। यथार्थ ब्रह्मचारी स्त्री, कागज, काष्ठ अथवा पाषाण को स्पर्श करने में कुछ भी भेद अनुभव नहीं करता है। ब्रह्मचर्य पुरुष तथा स्त्री दोनों के लिए आवश्यक है। भीष्म, हनुमान्, लक्ष्मण, मीराबाई, सुलभा तथा गार्गीहहये सभी ब्रह्मचर्य में प्रतिष्ठित थे।

केवल पाशविक मनोविकार पर नियन्त्रण करना ही ब्रह्मचर्य नहीं है। यह अपूर्ण ब्रह्मचर्य है। आपको अपनी सभी इन्द्रियों पर नियन्त्रण करना हैहहकान जो अश्लील कहानियाँ सुनना चाहते हैं, कामुक नेत्र जो कामोत्तेजक पदार्थों को देखना चाहते हैं, जिह्वा जो कामोद्दीपक पदार्थ का स्वाद लेना चाहती है तथा त्वचा जो कामोत्तेजक पदार्थों का स्पर्श करना चाहती है।

कामुक दृष्टि से देखना नेत्रों का व्यभिचार है, कामोत्तेजक विषय को सुनना कानों का व्यभिचार है तथा कामोद्दीपक बातें करना जिह्वा का व्यभिचार है।

ब्रह्मचर्य के आठ विच्छेद

आपको सावधानीपूर्वक आठ प्रकार के उपभोगों से बचना चाहिए। ये हैं : दर्शन अथवा स्त्रियों को

कामुक अभिप्राय से देखना, स्पर्शन अथवा उन्हें स्पर्श करना, केलि अथवा सविलास क्रीड़ा करना, कीर्तन अथवा अपने से विपरीत लिंगी के गुणों की प्रशंसा करना, गुह्य भाषण अथवा एकान्त में संलाप करना, संकल्प अथवा दृढ़ निश्चय करना, अध्यवसाय अथवा तुष्टिकरण की कामना से अपने से विपरीत लिंगी के निकट जाना तथा क्रिया-निवृत्ति अथवा वास्तविक सम्भोग-क्रिया। ये आठ प्रकार के उपभोग अखण्ड ब्रह्मचर्य के अभ्यास में एक प्रकार से आठ विच्छेद हैं। आपको बड़ी सावधानी, सच्चे प्रयास तथा सजग अवधान से इन आठ अन्तरायों से बचना चाहिए। जो व्यक्ति इन सभी विच्छेदों से मुक्त है, वही सच्चा ब्रह्मचारी कहा जा सकता है। एक सच्चे ब्रह्मचारी को इन सब आठ विच्छेदों का निष्ठुरतापूर्वक परिहार करना चाहिए।

ब्रह्मचारी को कामुक दृष्टि से किसी स्त्री को नहीं देखना चाहिए। उसे बुरी भावना से किसी स्त्री को स्पर्श करने अथवा उसके निकट जाने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। उसे उसके साथ खेलना, मजाक करना अथवा बातचीत नहीं करनी चाहिए। उसे न तो अपने मन में और न अपने मित्रों के समक्ष किसी स्त्री के गुणों की प्रशंसा करनी चाहिए। उसे स्त्री से एकान्त में वार्ता नहीं करनी चाहिए और न उसके सम्बन्ध में चिन्तन ही करना चाहिए। उसे स्त्री से यौन-सुख की विषय-वासना नहीं रखनी चाहिए। ब्रह्मचारी को मैथुन से

अवश्यमेव बचना चाहिए। यदि वह उपर्युक्त नियमों में से किसी को भी भंग करता है, तो वह ब्रह्मचर्य-व्रत का उल्लंघन करता है।

यद्यपि प्रथमोक्त सात प्रकार के मैथुन वीर्य की वास्तविक क्षति नहीं पहुँचाते, तथापि वीर्य रक्त से पृथक् हो जाता है और अवसर प्राप्त होते ही स्वप्न में अथवा अन्य किसी विधि से निकल जाने का प्रयास करता है। प्रथम सात प्रकार के मैथुनों में व्यक्ति मन से ही कामोपभोग करता है।

साधकों को काम-विषयक चर्चा में लिप्त नहीं होना चाहिए। उन्हें स्त्री के विषय में चिन्तन नहीं करना चाहिए। यदि स्त्री का विचार प्रकट हो, तो अपने इष्टदेवता की मूर्ति अपने मन में लायें। मन्त्र का जोर से जप करें।

कामुक दृष्टि, कामुक विचार, स्वप्नदोषहृदये सभी ब्रह्मचर्य-भंग अथवा ब्रह्मचर्य से पतन हैं। आपकी दृष्टि शुद्ध हो। दृष्टि-दोष त्याग दें। कामुक-दृष्टि स्वयं में ब्रह्मचर्य-भंग है। इससे अन्तःस्त्राव होता है। वीर्य अपने तन्त्र से पृथक् हो जाता है।

सभी स्त्रियों में माँ काली का दर्शन करें। उदात्त दिव्य विचारों का पोषण करें। जप तथा ध्यान नियमित रूप से करें। आप ब्रह्मचर्य में प्रतिष्ठित हो जायेंगे।

(अनूदित)

ध्यान प्रार्थना का एक उत्कृष्ट रूप तथा मन का आन्तरिक संवर्धन है। प्रार्थना ईश्वर की ओर प्रवाहित होती हुई तरंगों के समान होती है। ध्यान में विचार ईश्वर की ओर संकेन्द्रित हो जाते हैं।

स्वामी कृष्णानन्द

साधकों को सन्देश

परम पावन श्री स्वामी विद्यानन्द जी महाराज

हिमालय के आँचल में, उत्तराखण्ड की तपोभूमि में, माँ गंगा के तट पर स्थित गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के इस पावन आश्रम में आप सबका स्वागत करके मैं अपने सौभाग्य का अनुभव कर रहा हूँ। 'साधना-सप्ताह' आप सभी को नयी दिशा दे, नवीन स्फूर्ति दे तथा आशा की नव-किरण के रूप में ज्योति प्रदान करे!

इसे ईश्वर की अहेतुकी कृपा ही मानना चाहिए कि आप यहाँ साधक के रूप में एकत्रित हुए हैं। कलियुग में साधक होना अति-दुर्लभ है। अधिकांश लोग शारीरिक स्तर पर लौकिक, सांसारिक भोगों को भोगते ही यह अमूल्य जीवन नष्ट कर रहे हैं। वे भोगों को भोगना ही अपने जीवन का लक्ष्य मान रहे हैं। उनके मन में भगवदोन्मुख होने की कामना, आत्म-साक्षात्कार करने की अभिलाषा जाग्रत ही नहीं होती। कैसी विडम्बना है!

आप सब साधक हैं, जिज्ञासु हैं, आपमें मुमुक्षुत्व है। अतः आप सभी पर ईश्वर की विशेष कृपा है, अनुग्रह है; इसका अनुभव सदा करते रहना चाहिए। इस अहेतुकी कृपा को पूर्व-जन्म का पुण्य ही मानना चाहिए। इस प्रकार का जीवन दीपक जैसा है जो स्वयं तो जलता है, किन्तु दूसरों को प्रकाश देता है। साधक स्वयं तो संयम से रहता है, किन्तु उसका प्रभाव दूर-दूर तक पड़ता है। जैसे चन्दन का एक वृक्ष समस्त वन को सुगन्धित कर देता है, उसी प्रकार आप सभी

अपने-अपने क्षेत्रों में साधना की, आध्यात्मिकता की सुगन्ध बिखेर रहे हैं।

साधनामय जीवन ही दिव्य जीवन है। यह देखने में कण्टकाकीर्ण पथ है, किन्तु इस पर पुष्प भी बिखरे हैं। जैसे गुलाब के पौधे में काँटे लगे हैं, किन्तु गुलाब भी अपनी सुगन्ध तथा सौन्दर्य लुटा रहा है; जैसे कंकरीले रास्ते में रत्न बिखरे हों, तो पथिक की दृष्टि सदा रत्नों को समेटने में ही लगी रहेगी। इसी प्रकार साधक को यह मान कर चलना चाहिए कि साधना-पथ में कठिनाइयाँ भी आती हैं; अतः उनसे डरने की, विचलित होने की उसे आवश्यकता नहीं है।

आज गुरुपूर्णिमा के पवित्र पूर्व-प्रभात में आप सभी गुरुदेव के पावन आश्रम में एकत्रित हैं। इस पर तनिक विचार करें। इस आश्रम में अनेक साधक हैं; किन्तु यह सौभाग्य केवल चुने हुए आप लोगों को ही प्राप्त हुआ है जो कि इस 'साधना-सप्ताह' में सक्रिय रूप से सम्मिलित हो रहे हैं। आप साधारण साधक नहीं हैं, शिष्ट साधक हैं।

अतः आप जैसे चुने हुए विशेष साधकों से यह अपेक्षा की जाती है तथा आपका स्वतः यह कर्तव्य हो जाता है कि आपका व्यवहार, आचरण विशेष प्रकार का हो तथा आपके मन, वचन तथा कर्म में एकरूपता हो, समत्व हो; उसमें सात्त्विकता हो।

यदि आप ऐसा जीवन व्यतीत करेंगे, तो आप साधारण व्यक्ति नहीं रहेंगे। आपमें अहं नहीं होगा वरन् सहज, स्वाभाविक रूप से भक्ति करने का भाव होगा। एक वैष्णव महात्मा अपनी स्वच्छता के विषय में सदा सजग तथा सचेष्ट रहता है। उसमें गर्व नहीं होता, वरन् वह उसका उत्तरदायित्व है जो कि स्वभाव का रूप ग्रहण कर लेता है।

साधक एक असाधारण व्यक्ति है, अतः उसे किसी भी साधारण व्यक्ति के साथ अपनी तुलना नहीं करनी चाहिए। उसका एक भिन्न स्थान है, समाज में उसका उच्च स्तर है; क्योंकि उसने अपना दिव्य लक्ष्य निश्चित किया हुआ है जिसे प्राप्त करने के लिए वह निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। उसके पास व्यर्थ में नष्ट करने के लिए समय ही नहीं होना चाहिए।

कभी-कभी संग-दोष से साधक अपने पथ से भटक सकता है; किन्तु बाद में पश्चात्ताप तथा प्रायश्चित्त करके उसे अपनी भूल स्वीकार कर लेनी चाहिए तथा उसमें सुधार कर लेना चाहिए। 'सवेरे का भूला यदि सन्ध्या को घर आ जाये, तो वह भूला नहीं कहलाता।'

साधारण मनुष्य की गति अधोमुखी होती है। वह अन्धकार की ओर बढ़ाती है, सांसारिक भोगों की ओर बरबस खींचती है तथा बन्धनों में जकड़ने का प्रयत्न करती है। आपकी गति ऊर्ध्वमुखी होनी चाहिए, प्रकाश की ओर अग्रसर होनी चाहिए, शाश्वत आनन्द प्राप्त कराने वाली, दिव्यता और

महानता को प्राप्त कराने वाली तथा मुक्ति प्रदान कराने वाली होनी चाहिए। मन में अशुभ विचारों का प्रवेश सर्वथा वर्जित होना चाहिए।

तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय।

अशुभ विचारों का प्रवेश वहाँ सम्भव ही नहीं है। प्रकाश के सम्मुख अन्धकार टिक नहीं सकता। अमृत में मृत्यु का अस्तित्व ही नहीं है।

लक्ष्य को सामने रखना चाहिए। पथ पर दृढ़ता से तथा सँभाल-सँभाल कर पग रखना चाहिए। 'ईश्वर के यहाँ देर है, अन्धे नहीं।' आप अपना कार्य करते जाइए। फल की चिन्ता मत कीजिए। एक क्षण का भी भगवद्-चिन्तन व्यर्थ नहीं जाता, उसका अपना महत्त्व है, मूल्य है तथा स्थान है।

आपके हृदय में यह भावना होनी चाहिए कि आप ग्रहण कर रहे हैं; ईश्वर आपको निरन्तर दे रहा है। आप अपनी झोली में समेट रहे हैं उसकी अहेतुकी कृपा, दिव्यता तथा अमरत्व। आप व्यष्टि चेतना के रूप में हैं तथा आपको समष्टि चेतना में लय हो जाना है।

आपका यह 'साधना-सप्ताह' तभी सफल होगा, जब आप अपने एक-एक पल को अमूल्य मान कर मन, वचन तथा कर्म से भगवद्-चिन्तन में जुटे रहेंगे। सदा आत्मा का ही चिन्तन कीजिए।

ब्रह्मचर्य का अर्थ है ब्रह्म के समान रहना, मात्र ब्रह्मचर्य-पालन का व्रत लेना नहीं।
इसको अन्तर से उद्भूत होना चाहिए।

स्वामी कृष्णानन्द

प्रणव-रूप आत्मा ३

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

अब प्रज्ञा की सुषुप्ति अवस्था और मकार में तुलना की जाती है। 'सुषुप्तस्थानः प्राज्ञो मकारस्तृतीया मात्रा' ह्रस्वमकार ओंकार की तीसरी मात्रा है और इसकी तुलना आत्मा के तृतीय पाद, कारण अवस्था, प्रज्ञा से की जाती है। 'मितेरपीतेर्वा' ह्रस्वह्रस्व समस्त पदार्थों का मान और लय है। ॐ का उच्चारण करने पर अकार और उकार 'म' में लीन हो जाते हैं, ऐसे ही प्रज्ञा में, सुषुप्ति जिसका स्थान है और जो कारण अवस्था है, जाग्रत और स्वप्न के समस्त संस्कार विलीन हो जाते हैं। जिस प्रकार से ओंकार के उच्चारण की समाप्ति आप 'म' से करते हैं, इसी प्रकार आपके समस्त अनुभवों की समाप्ति सुषुप्ति में होती है। मकार से ओंकार की समाप्ति के अनन्तर पुनः आप इसका उच्चारण कर सकते हैं, इसी प्रकार सुषुप्ति अवस्था के अनन्तर भी पुनः जाग्रत अवस्था प्रारम्भ होती है, क्योंकि सुषुप्ति जागृति का कारण है। जाग्रतावस्था का अंकुर सुषुप्ति में ही निहित रहता है। एक भाव में तो सुषुप्ति जाग्रतावस्था की कारणावस्था है और दूसरे भाव में जाग्रतावस्था सुषुप्ति का कार्य है। जाग्रतावस्था का कारण अतृप्त वासनाओं का वह क्षोभ है जो सुषुप्ति में दबा रहता है। इस भाव में हम कह सकते हैं कि गहन सुषुप्ति की अवस्था का कार्य है जाग्रतावस्था। गहन सुषुप्ति कारण है और जाग्रत तथा स्वप्न अवस्था के सभी अनुभव कार्य रूप हैं। जिस प्रकार ईश्वर समस्त पदार्थों का कारण रूप है, उसी

प्रकार सुषुप्ति की अवस्था जाग्रत और स्वप्न की अवस्थाओं की कारण है, क्योंकि अतृप्त वासनाओं की पूर्ति हेतु ही हम सुषुप्ति से जागते हैं। हमारी समस्त कामनाएँ यदि पूर्ण हो गयी हैं, तो हम सुषुप्ति से कदापि जागृति में नहीं आयेंगे। क्यों जागें हम? प्रयोजन क्या है? कहीं तो कुछ अधूरापन है, अपूर्ण है, अनाचरित है, जिसके लिए हम जागते हैं। प्रारब्ध कर्म ही हमें जगाता है और कर्म में प्रवृत्त करता है। वही हमें क्षुब्ध करता है और भौतिक विषयों की ओर प्रेरित करता है। इस प्रकार, एक भाव में तो प्रज्ञा (सुषुप्ति) विश्व (जाग्रत) और तैजस (स्वप्न) के अनुभवों के लिए कारण स्वरूपा है; किन्तु दूसरे भाव में प्रज्ञा को कार्य रूपा भी मान सकते हैं, क्योंकि प्रज्ञा चेतना की वह अवस्था है जिसमें सब संस्कार अपूर्ण, अव्यक्त निहित रहते हैं और ये संस्कार भी जाग्रत और स्वप्न की अवस्थाओं के अनुभव और दर्शन के परिणाम के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं। इस भाव में सुषुप्ति जाग्रत अवस्था का कार्य है। ओंकार में मकार का भी वही स्थान है। हम कह सकते हैं कि 'ॐ' के उच्चारण की शृंखला में 'ॐ' मकार से ही प्रारम्भ होता है और मकार में ही समाप्त होता है। प्रणव के उच्चारण की भाँति ही जागृति और सुषुप्ति की शृंखलाएँ हैं। सुषुप्त स्थानी प्रज्ञा समस्त पदार्थों का माप है अर्थात् इस सुषुप्ति की अवस्था में आनन्दमय कोश (कारण अवस्था) में अभिव्यक्त संचित कर्मों के रूप में

संस्कारों का निर्णय जाग्रतावस्था और स्वप्नावस्था के अनुभवों से होता है। संचित कर्म अतृप्त संस्कारों और वासनाओं का वह समूह है जो गहन सुषुप्ति (प्रज्ञा) में विद्यमान रहता है और जाग्रत तथा स्वप्न की अवस्थाओं में अनुभव रूप में अंकुरित होता है। इस भाव में हम अपने अनुभवों को सुषुप्ति में विद्यमान प्रवृत्तियों से मापते हैं। स्वप्नावस्था और जाग्रतावस्था के अनुभवों को उन शक्तियों द्वारा मापा जाता है जो सुषुप्ति की अवस्था में अपूर्ण संस्कारों और वासनाओं के रूप में विद्यमान हैं। एवंविध, यह अनुभवों का माप है। इसी प्रकार मकार सभी प्रकार की उच्चारण की प्रक्रियाओं का धारक है। मकार अपने भीतर अकार और उकार को धारण किये हुए है और इसी प्रकार ओंकार के उच्चारण की समाप्ति होती है। जिस प्रकार समस्त अनुभव सुषुप्ति में लीन हो जाते हैं और हमारी समस्त चेष्टाएँ भी सुषुप्ति काल में विराम को प्राप्त होती हैं, उसी प्रकार प्रणव का उच्चारण भी मकार के प्रारम्भ होने पर रुक जाता है और अकार तथा उकार स्वयं ही मकार में विलीन हो जाते हैं।

‘मिनोति ह वा इदं सर्वम्’ ह्रह्रइस विधि से उपासना करने वाला सबको माप लेने की शक्ति रखता है अर्थात् वह सर्वज्ञ हो जाता है। वह स्वयं ईश्वर बन जाता है। वह सब वस्तुओं का मान बन जाता है। सृष्टि की प्रत्येक वस्तु के बोध के लिए वह मानदण्ड बन जाता है। सर्वत्र उसे ही निर्णायक माना जाता है। ब्रह्माण्ड में समस्त अनुभवों का केन्द्र अथवा सम्पूर्ण सृष्टि का वह एक प्रमाणपुरुष बन जाता है। ‘अपीतिश्च भवति’ ह्रह्रवह लय का स्थान हो जाता है। भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय में कहा है ह्रह्रसागर में नदियों की भाँति सब-कुछ उसमें प्रवेश कर जाता है। ईश्वर सम्पूर्ण सृष्टि का लय-स्थान है और जब आप ही ईश्वर हो जाते हैं, आत्ममय हो जाते हैं तो सम्पूर्ण सृष्टि आपमें विलीन हो जाती है। समष्टि और व्यष्टि रूप में प्रज्ञा और प्रणव की कारण अवस्था, मकार और प्राज्ञ के अभेद भाव को लक्ष्य में रख कर जो साधक उपासना करता है, वह इस अवस्था को प्राप्त करता है।

(अनुवादिका : श्रीमती गुलशन सचदेव)

आध्यात्मिक अभ्यास अथवा साधना को न तो प्रदर्शन की आवश्यकता है, न ही घोषणा द्वारा प्रमाणित करने की। इसे तो जीना होता है और सतत अबाध रूप से जीना होता है। यह सरल है। यह ‘इच्छाओं के जीवन से मृत हो जाना’ तथा ‘केवल परमात्मा के प्रेम में जीना’ है। कामनाओं के प्रति मर जाना ही यथार्थ में जीना है, क्योंकि इच्छाएँ तो वास्तव में आध्यात्मिक व्यक्ति की मृत्यु ही हैं। यदि इच्छा जीवित रहती है, तो आत्मा मुरझा जाती है। आत्मपरक जीवन जीना समस्त इच्छाओं को समाप्त कर देना है। इच्छाओं से रहित हो जाना अपने जीवन के कर्तव्यों का पालन करने का विरोधी नहीं है। इसमें आप किसी इच्छा की पूर्ति का लक्ष्य न रख कर कर्तव्य निभाने के उद्देश्य से कार्य करते हैं। इसमें व्यक्ति उच्चतर चेतना के उस आयाम में कार्य करता है कि वह उसी कर्म को करते हुए अपने मोक्ष के लिए प्रयत्नशील रहता है। इच्छाओं से रहित निष्काम कर्म अब बन्धन का कारण नहीं रहता।

स्वामी चिदानन्द

मन की दिशा आप निश्चित करें

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

उन श्रद्धेय गुरुदेव को हम प्रेमपूर्वक नमन करते हैं जो प्रत्येक प्रातः आपको अपने निकट, अपने सान्निध्य में खींच लेते हैं जिससे की आप अपनी प्रातः आध्यात्मिक, सात्त्विक और योगमय ढंग से आरम्भ करें, कि आप सदा-विद्यमान दिव्यता के आन्तरिक ध्यान में, मौन ध्यान में रहते हुए दिवस में प्रवेश करें, दिन का आरम्भ लाभपूर्ण ढंग से करें।

जैसे ही आप निद्रा से जाग्रत अवस्था में प्रवेश करते हैं, मन अपना कार्य आरम्भ कर देता है। यह आप पर निर्भर करता है कि यह कार्य किस दिशा में होगा, क्या मन को अपने आपके ऊपर ही छोड़ दिया जायेगा हहहआपके भीतर उठने वाले सपनों, आपकी वासनाओं में ही अस्त-व्यस्तहहहअथवा क्या इसे श्रेष्ठ, उदात्त ऊर्ध्वगामी दिशा दी जायेगी? निश्चित रूप से प्रतिदिन प्रातःकाल यहाँ बैठ कर आप यही करते हैं।

आप समस्त अन्धकार से परे ज्योतियों की परम ज्योति के रूप में मौन द्रष्टा हैं। आप जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्तिहहहतीनों अवस्थाओं को देखने वाले मौन साक्षी हैं। आप चेतना स्वरूप में तीनों अवस्थाओं में प्रकाशित होते हैं। आप ही हैं जिसने यह निर्णय लेना है कि 'मन' कहलाने वाले इस महान् उपकरण, जो कि दिव्य पराशक्ति से भिन्न नहीं है, इससे आपने क्या करना है। आप ही ने निश्चित करना है कि आज आप इस शक्ति का उपयोग कैसे करने जा रहे हैं, और यह निर्णय जाग्रत अवस्था में जाग्रत चेतना के प्रथम भाग में लिया जाता है।

इसीलिए इसका अत्यन्त महत्त्व है कि जब आन्तरिक प्रार्थना और ध्यान की आधे घण्टे की अवधि पूर्ण होती है और आप आँखें खोलते हैं, तो सर्वप्रथम आप प्रार्थना करते हैं :

**नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते
सहस्रकोटियुगधारिणे नमः ॥**

आप उस परब्रह्म को नमन करते हैं जो अनन्त है, जो शाश्वत है। वह आपके सम्मुख सहस्रों रूपों में प्रकट होता है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक रूप उन्हीं का रूप है। आप नेत्र खोलते हैं और उदित होते दिवस को निहारते हैं, जो-कुछ भी आपको दृष्टिगोचर होता है, सब-कुछ दिव्य है, कुछ भी प्रपंच नहीं। सब आत्म-तत्त्व है, कुछ भी भौतिक पदार्थ नहीं है।

आप उस जगत् में रहते हैं जो शत-प्रतिशत आध्यात्मिक है। समस्त दिशाओं में, सभी नाम-रूपों में आप एकमात्र उस शाश्वत, अनन्त सत्ता को देखते हैं। इस प्रकार आपका क्षणमात्र के लिए भी भगवान् के साथ सम्बन्ध-विच्छेद नहीं होता। आन्तरिक रूप से आप ध्यान-धारणा द्वारा उनसे सम्बन्ध बनाये रखते हैं। बाह्य रूप में आप दृष्टिकोण के द्वारा, दिव्य जागरूकता और दिव्य भावना के द्वारा उनका चिन्तन करते रहते हैं। जड़-चेतन, प्रत्येक वस्तु-पदार्थ में आप उन्हीं को देखते

हैं। आपमें यह ऐसी दृष्टि, ऐसा भाव, ऐसा दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए ही मौन ध्यान की परिसमाप्ति इस प्रार्थना सहित होती है।

उन्हीं परब्रह्म में आप निवास करते हैं, कार्यशील होते हैं और उन्हीं से आपका अस्तित्व है और उन्हीं में अपनी स्थिति रखते हुए आप समस्त लौकिक व्यवहार सम्पन्न करते हैं। आप कहाँ हैं? क्या आप समाधि हाल में हैं? नहीं, आप भगवान् में हैं। क्या आप ऋषिकेश में हैं? नहीं, आप भगवान् में हैं। क्या आप भारत में हैं? नहीं, आप भगवान् में हैं। क्या आप इस पृथ्वी पर हैं? नहीं, आप भगवान् में हैं। क्या आप विश्व में हैं? यदि यहाँ तक आपकी चेतना का विस्तार हो गया है, तो आप भगवान् में स्थित हैं और भगवान् आपमें निवास करते हैं।

एक साधक के सम्बन्ध में सत्य यह है। साधक वह है जो भगवान् में स्थित हो, क्योंकि यह समाधि हाल, ऋषिकेश, भारत, पृथ्वी और यह विश्व सब भगवान् में ही हैं। यही वह आयाम है जो कि आपके हृदय में जाग्रत होना चाहिए। यह दृष्टिकोण है, जो आपके भीतर अनुप्राणित होना चाहिए। तब फिर आप भले ही कहीं भी हों, कुछ भी करें, आप भगवान् में और भगवान् आपमें हैं। तब आप इस धरती पर नहीं, दिव्य साम्राज्य में निवास करते हैं।

और जब आप दिव्य साम्राज्य में निवास करते हैं, तो दिव्य होना, दिव्यता अनुभव करना, दिव्यतापूर्ण कार्य करना आपके लिए सहज-स्वाभाविक हो जाता है। यह बनावटी प्रयास नहीं रहता। यह कुछ ऐसा नहीं होता, जिसको अपने भीतर उत्पन्न करने का, स्वयं में लाने का आपको प्रयत्न करना पड़े, आपको स्वयमेव ज्ञात हो जाता है कि यह आपके जीवन का यथार्थ है, सत्य है।

अतः आधा घण्टा ध्यान के पश्चात् आप जो-कुछ भी उच्चारण करें, उसे अपने हृदय, मन और सम्पूर्ण चेतना में परिव्याप्त होने दें। और अपना सम्पूर्ण दिवस उसी दृष्टिकोण से ओत-प्रोत होने दें। आप यह जान लें कि आप जो कोई भी हैं, भौतिक रूप से भी आप भगवान् में ही हैं। केवल भाव में ही नहीं, स्थूल रूप में भी आप भगवान् में ही हैं; क्योंकि भगवान् के अतिरिक्त अन्य किसी का अस्तित्व ही नहीं है।

‘वह’ केवल अन्तर्निहित आत्म-तत्त्व ही नहीं है। जब वह पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश में हैं, तो वह नाम और रूपों में भी हैं। जिस व्यक्ति को यह बोध नहीं है, उसे तो नाम और रूप को अलग हटा कर आन्तरिक तत्त्व को देखना पड़ेगा। किन्तु जब व्यक्ति इस बोध से पूर्ण हो जाता है, तब सब-कुछ, यहाँ तक कि नाम और रूप भी भगवान् और केवल एकमेव भगवान् ही हो जाते हैं।

यह दृष्टिकोण है, अपने सम्पूर्ण जीवन को दिव्य बनाने का। अपने समस्त जीवन को आध्यात्मिक बनाने का यह रहस्य है। आप जहाँ भी जाते हैं, सब-कुछ स्वयमेव यौगिक हो जाता है। जहाँ-कहीं भी आपका मन जाता है, यह भगवान् में ही होता है, यह सब जगह भगवान् से ही संयुक्त रहता है। सब-कुछ योग की एक सतत प्रक्रिया बन जाता है। जो दृष्टिकोण आपके मन-मन्दिर में बना होता है, केवल वही आप बाह्य जगत् में निहारते हैं।

भगवान् में निरन्तर निवास करने का यह ही रहस्य है। सर्वव्यापक, सर्वदा विद्यमान दिव्यता आपको ऐसी ही दृष्टि प्रदान करे तथा आप दिव्य जीवन जीने में सफलता प्राप्त करें और इस प्रकार शाश्वत परम आनन्द शान्ति इसी शरीर में रहते हुए प्राप्त कर लें!

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

स्वास्थ्य और ब्रह्मचर्य १

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

स्वास्थ्य धन से बढ़ कर है

अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो। मिठाई अधिक मत खाओ। आवश्यकता से अधिक खा कर पेट पर बोझ न डालो। प्याज, लहसुन, मांस और मछली न खाओ। दूध, फल, परवल, लौकी और पालक खाओ।

प्रतिदिन ठण्डे पानी से स्नान करो। खुरदरे तौलिये से शरीर को रगड़ो। रोज साबुन का उपयोग न करो। नदी में डुबकी लगाओ। खुली हवा में दौड़ लगाओ। नियमित रूप से आसन करो। शीर्षासन, सर्वांगासन, मत्स्यासन और भुजंगासन करो। दण्ड-बैठक लगाओ। सुबह-शाम धूप का सेवन करो। थोड़ी देर तक गहरी साँसें लो।

शुद्ध और छना हुआ पानी पिओ। स्वास्थ्य विज्ञान की थोड़ी-बहुत जानकारी रखो। अपने भोजन पर मक्खी न बैठने दो।

ब्रह्मचर्य

विचार, वाणी और कर्म की शुद्धता का नाम ही ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य के पालन से अच्छा स्वास्थ्य, अन्तःशक्ति, मानसिक शान्ति, दीर्घ आयु और ईश्वर-दर्शन प्राप्त होते हैं। नैष्ठिक ब्रह्मचारी सारे विश्व को हिला सकता है।

ब्रह्मचर्य के बल से ही लक्ष्मण जी रावण-पुत्र मेघनाद का संहार कर सके थे। पाण्डवों और कौरवों के

पितामह भीष्म ने ब्रह्मचर्य के ही बल से मृत्यु पर विजय पा ली थी। ब्रह्मचर्य से ही हनुमान् महावीर बने।

ब्रह्मचर्य से तुम्हें अनुपम स्वास्थ्य मिलेगा। ब्रह्मचर्य का पालन करने से दीर्घ आयु, परम सुख, शक्ति, तेज, बल, स्मरण-शक्ति, ज्ञान, वैभव और अक्षय कीर्ति की प्राप्ति होती है तथा सदगुणों और सत्यनिष्ठा का विकास होता है। नियमित रूप से जप, कीर्तन, प्रार्थना, ध्यान और सर्वांगासन करो। शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करो। तुम एक तेजस्वी ब्रह्मचारी बनोगे।

स्वास्थ्य के लिए उपवास करो

हे शंकर! पेट दुखता है तो खाना छोड़ दो। उपवास करो। एरण्ड के तेल की एक खुराक ले लो। गिलास-भर गरम दूध पिओ। उपवास से बहुत लाभ होगा।

सदा अपने पेट में दवाएँ न भरते रहो। प्राकृतिक जीवन जिओ। प्रातःकाल और सायंकाल धूप-स्नान करो। नियमित व्यायाम करो। फल और टमाटर का रस लो। तुम्हारा स्वास्थ्य सुन्दर रहेगा।

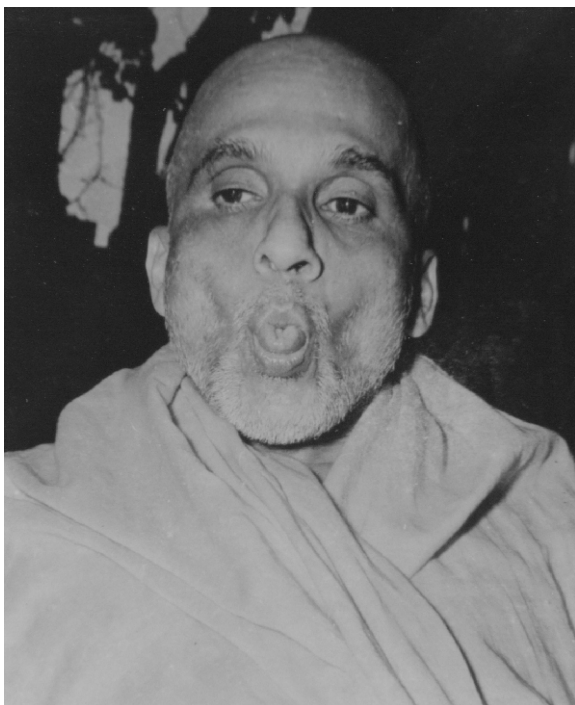
तुम स्वयं अपना डाक्टर बनो। डाक्टर के पास न जाओ। शुद्ध वायु, शुद्ध जल, धूप, पौष्टिक आहाररह्य ये उत्तम औषध हैं। सदा प्राकृतिक जीवन बिताओ।

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

योग द्वारा स्वास्थ्य :

शीतली

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज



(परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज)

विधि

बैठने वाले आसनों में से किसी एक में बैठ जायें। मुँह खोलें और ओष्ठों को वर्तुलाकार बनायें। जिह्वा को बाहर निकाल कर नली की भाँति बनायें। जिह्वा से निर्मित नली के द्वारा वायु अन्दर खींचें। फुफ्फुसों को जितना भी सम्भव हो सके, स्वच्छ तथा शीतल वायु से भरें। पूरक के पश्चात् जिह्वा मुख के अन्दर वापस करें और मुख बन्द कर लें। अपना शिर नीचा करें और जब तक कुम्भक में रहें, जत्रुक (हँसली अस्थि) को टुड्डी से स्पर्श करायें। अपना शिर सीधा लाने के पश्चात् दोनों नासारन्ध्रों से धीरे-धीरे रेचक करें। प्रतिदिन दश से पन्दरह बार अभ्यास करें।

लाभ

यह प्राणायाम शरीर को शीतल करता, नेत्रों और कानों को प्रशमित करता और रक्त को शुद्ध करता है। यह तृषा बुझाता और क्षुधा को शान्त करता है। यह जीर्ण मन्दाग्नि, प्लीहा की सूजन, विभिन्न पुराने चर्मरोगों, हलके ज्वरों तथा पित्त और कफ दोषों को आरोग्य करता है।

(अनुवादक : श्री शिवगोविन्द गुप्त)

गुरु आपके हृदय में निवास करते हैं, उनका उदात्त आशीर्वाद, उनकी आध्यात्मिक शिक्षाओं की गूँज आपको अपने भीतर आध्यात्मिक विकास के रूप में करनी चाहिए। उनके चरित्र और आचरण की उदात्तता आपके मन में बसनी चाहिए। उनका दिव्य स्वभाव तथा जैसा दिव्य जीवन उन्होंने जिया है, वैसे ही आपको रहने के लिए अपना मन बनाना चाहिए। आपको देख कर ही आपके गुरु के देवत्व की पहचान हो जाये, ऐसा जीवन व्यतीत करना चाहिए।

स्वामी चिदानन्द

बाल-स्मृतः

सच बोलने का मूल्य

स्वामी रामराज्यम्

डाक्टर बिधान चन्द्र राय पश्चिमी बंगाल के मुख्यमंत्री थे। डाक्टरी शिक्षा के छात्र के रूप में वह प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण करते थे। परन्तु सदा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने वाले राय शिक्षा के तीसरे वर्ष में अनुत्तीर्ण हो गये। सबको आश्चर्य हुआ परन्तु राय को नहीं। वह अपने अनुत्तीर्ण होने का कारण समझते थे।

कारण यह था कि उनके विद्यालय के फाटक के सामने उनके एक प्राध्यापक की गलती से कार चलाते समय एक दुर्घटना हो गयी। घटनास्थल पर राय मौजूद थे। पुलिस आयी और गवाह के रूप में राय का नाम-पता नोट कर ले गयी। मुकदमा चला। राय सरकारी गवाह बने। न्यायालय में उन्होंने कह दिया कि उन्होंने प्राध्यापक को गलती करते हुए देखा था। प्राध्यापक पर जुरमाना हो गया। प्राध्यापक राय से अप्रसन्न हो गये। उन्होंने अपने विषय की परीक्षा में बहुत कम अंक दे कर राय को अनुत्तीर्ण कर दिया।

अगले वर्ष राय ने दोबारा परीक्षा दी और प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो गये। एक दिन उनके प्राध्यापक ने पूछाहह “तुम्हें पता है कि गत वर्ष तुम क्यों अनुत्तीर्ण हो गये थे?”

“सर, मुझे पता है। मैंने आपके विरुद्ध गवाही दी थीहहइस कारण।”

“लेकिन तुमने मेरे विरुद्ध गवाही दी ही क्यों?”

“सच बोलने का मूल्य मैं समझता हूँ, सर! उस मूल्य की तुलना में एक वर्ष की पढ़ाई की हानि कुछ भी नहीं है।”

प्राध्यापक को कोई उत्तर देते नहीं बना।

बच्चो, सच बोलने से भगवान् प्रसन्न होते हैं, निश्चित ही प्रसन्न होते हैं। भगवान् हमसे प्रसन्न रहें, इससे भी कीमती बात कोई हो सकती है क्या? इसलिए सच बोलने की कीमत अकूत है। लेकिन सच बोलने से कभी-कभी कष्टों का सामना करना पड़ जाता है, कडुए बोल सुनने पड़ जाते हैं और बनते हुए काम बिगड़ जाते हैं। इसके बावजूद इन असुविधाओं से घबराना नहीं चाहिए। झूठ बोल कर इन असुविधाओं से बच निकलना और सच बोल कर भगवान् को प्रसन्न करनाहहइस दोनों बातों में तुम किसे चुनोगे? क्या झूठ बोलना? नहीं, सच बोल कर सदा भगवान् को प्रसन्न करने का प्रयत्न करना। भगवान् को प्रसन्न करके उनकी कृपा के जो हीरे-मोती तुम्हें मिलेंगे, उनकी कदर करना।

□□□

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

‘शिवानन्द होम’ द्वारा सेवा

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय ‘शिवानन्द होम’ के द्वारा अपनी विनम्र सेवा में निरन्तर लगा हुआ है। इस ‘होम’ में निराश्रित साधनहीन व्यक्तियों के लिए चिकित्सीय सहायता उपलब्ध करायी जाती है। यह तपोवन के निकट लक्ष्मणझूला के पास स्थित है।

गत मास एक व्यक्ति ने यीशु की इस कथनी की याद दिला दीहह “मेरे भाई, लोगों के लिए आप किंचित् भी कुछ करते हैं, तो यह वास्तव में मेरे लिए ही करते हैं।”

हुआ यह कि एक विकलांग व्यक्ति अपनी तिपहिया गाड़ी में डाल कर एक रोगी को लाया। यह रोगी एक अकिंचन, जरूरतमन्द, छिन्नांग, तपेदिक रोग ग्रसित था। गुर्दे इसके खराब हो चुके थे, मूत्र संक्रमण से पीड़ित था, मूत्र आना पूरी तरह रुका हुआ था। अन्य रोगियों से इसे अलग रखा गया है और अब धीरे-धीरे इसकी स्थिति में सुधार हो रहा है। आध्यात्मिक साहित्य पढ़ते हुए और भजन सुनते हुए यह अपना समय सार्थक कर रहा है।

एक अन्य दयालु समारी ने एक महिला रोगी के बारे में सूचना दी जो आश्रम मुख्यालय के निकट घूम रही थी। सूचना देने वाले दयालु ने अश्रुपूरित नेत्रों से कहाहह “मुझे लगता है कि वह महिला अपनी देखभाल कर सकने में असमर्थ है।” जब होम में भरती कर लिया गया तो पता चला कि यह दीदी तो मानसिक रोग से ग्रस्त है, अपना नाम तक उसे पता नहीं। अतः उसे ‘हरि देवी’ नाम दे दिया गया, क्योंकि अपनी बुलन्द

आवाज़ में वह एक ही शब्द निरन्तर बोल रही हैहहहरि ॐ तत् सत्, हरि ॐ तत् सत्!

इसके अतिरिक्त सेवा का एक और आदर्श सामने आया, जब एक किशोर लड़का एक रोगी को भरती करवाने के लिए ‘शिवानन्द होम’ में उठा कर ले आया। उसने इस रोगी को आश्रम क्षेत्र में असहाय अवस्था में पड़ा हुआ देखा; यह उठने में भी असमर्थ था। उस किशोर ने अपने हृदय की आवाज़ को सुना और इस अनजान व्यक्ति की सेवा का अवसर न गँवा कर उसे ‘होम’ में उठा कर ले आया। इतना ही नहीं, वह उसे छोड़ कर नहीं गया, अपितु सरकारी अस्पताल में जब उसे भरती कराना पड़ा तो दिन-रात उसकी देखभाल की। प्रभु-कृपा से अब ठीक हो कर उस रोगी को छुट्टी मिलने ही वाली है। उसका तपेदिक का दीर्घकालीन इलाज ‘शिवानन्द होम’ में चलता रहेगा।

एक अन्य रोगी इस माह भरती किया गया, जिसका एच. बी. मात्र ३.१ था, रक्त देने के बाद वह शीघ्र ही ठीक होने लगा। उसे दमे का भी गम्भीर रोग है जो इलाज से सुधर रहा है। इसके अतिरिक्त एक बाबा जी को भी लाया गया था, जिनके सिर में बाह्य और भीतरी दोनों चोटें थीं, खोपड़ी की हड्डी टूटी हुई थी और रक्तचाप ३०० से भी अधिक था, वह बेहोशी की हालत में थे। अगले ही दिन उन्होंने देह त्याग दी। भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति और सद्गति दें! ॐ नमः शिवाय।

“भूखे को भोजन दें। वस्त्रहीन को वस्त्र दें। रोगी की सेवा करें। यही दिव्य जीवन है।” स्वामी शिवानन्द

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय में पारम्परिक भजन-कीर्तन-कार्यक्रम

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के प्रथम पुण्य तिथि आराधना के कार्यक्रमों की शृंखला के अन्तर्गत दिव्य जीवन संघ मुख्यालय में १५ से १७ जून २००९ तक तीन दिवसीय सम्प्रदाय भजनों का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

हमारे निमन्त्रण पर त्रिवेन्द्रम् के श्री गोपालकृष्ण भजन मण्डली के उच्चकोटि के भक्त आश्रम मुख्यालय में पधारे। सुसंयोगवश यह उल्लेखनीय है कि इस सम्प्रदाय भजन के प्रवर्तक



और गुरु ब्रह्मलीन श्री गोपालकृष्ण भागवतार १९५३ में शिवानन्द आश्रम में आये थे और परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के सम्मुख भजन प्रस्तुत किये थे। अब श्री रामदास जी और उनकी इस भजन मण्डली ने 'जयदेव के गीत गोविन्द' (अष्टपदी) का पारम्परिक गान, तीन दिनों में तीन विभिन्न भागों में बाँट कर किया। इसके अतिरिक्त वारकरी सम्प्रदाय के मराठी सन्तों के अभंग, सन्त कबीरदास, मीराबाई के भजन तथा दक्षिण भारत के सन्तों यथा श्री पुरन्दरदास, श्री त्यागराज, श्री भद्राचल रामदास, श्री कनकदास इत्यादि के भजन भी गाये। १६ के सायंकालीन सत्संग में 'दीप प्रदक्षिणा' नृत्य हुआ, जिसमें प्रज्वलित दीपक के चारों ओर घूमते हुए भजन-संकीर्तन और नृत्य किया गया। १७ की रात्रि को त्यागराज द्वारा रचित भजनों सहित 'दोलोत्सव' किया गया। परम पूज्य गुरुदेव की पावन समाधि के सम्मुख उन्हीं पारम्परिक सम्प्रदाय भजनों को जिन्हें १९५३ में ब्रह्मलीन श्री गोपालकृष्ण भागवतार जी ने स्वयं गुरुदेव के सम्मुख प्रस्तुत किया था, को प्रस्तुत कर पाने के सौभाग्य से भजन मण्डली के गायक अत्यन्त भाव-विभोर हो रहे थे।

तीन दिवसीय इस कार्यक्रम के दर्शन-श्रवण का जिन्हें सौभाग्य प्राप्त हुआ, वह इस विलक्षण अनुभव को प्राप्त कर अत्यन्त हर्षित थे। सभी इससे प्रेरित हुए अनुभव कर रहे थे। भजन-संकीर्तन के गायक तथा श्रोता सम्पूर्ण कार्यक्रम में परस्पर एक ही होने जैसा अनुभव कर रहे थे तथा श्रद्धेय गुरुदेव के पावन समाधि-मन्दिर में चहुँओर एक साकार शान्ति, आनन्द और समरसता छायी हुई थी।

मण्डली के सदस्यों को कार्यक्रम के समापन-दिवस पर परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज तथा कोषाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज द्वारा सम्मानित किया गया।

आश्रम मुख्यालय में २३ से २९ मई तक भागवत सप्ताह का आयोजन

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की प्रथम पुण्यतिथि आराधना के कार्यक्रमों के प्रारम्भ के रूप में आश्रम मुख्यालय के नव-निर्मित स्वामी शिवानन्द सत्संग भवन (शिवानन्द ऑडिटोरियम) में २३ से २९ मई २००९ तक आदरणीय डा. श्यामसुन्दर पराशर शास्त्री जी महाराज (वृन्दावन वाले) के द्वारा भागवत सप्ताह का आयोजन किया गया।

साधुओं, जिज्ञासुओं, आश्रम के भक्तों और साधकों ने इस पुनीत कार्यक्रम में भाग लिया। इसके साथ ही बड़ी संख्या

में बाहर से भी अतिथि जन इसमें सम्मिलित होने के लिए आये हुए थे।

इस सप्ताह की पावन कथा की पूर्णाहुति २९ मई को सफलतापूर्वक की गयी। दिव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष स्वामी जी ने डा. श्यामसुन्दर पराशर शास्त्री जी का भक्तों के लाभार्थ की जाने वाली इस कथा का आमन्त्रण स्वीकार करने के लिए धन्यवाद किया। स्वामी जी महाराज ने इस पुनीत कार्य में सहयोगार्थ अथक सेवा देने वालों का भी हार्दिक धन्यवाद किया।

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की आस्ट्रेलिया की द्वितीय यात्रा के दशम वर्ष महोत्सव के उपलक्ष्य में दिव्य जीवन संघ, आस्ट्रेलिया के आमन्त्रण पर, परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज (उपाध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय) अप्रैल-मई २००९ में आस्ट्रेलिया की विदेश-यात्रा पर गये। अपनी इस विदेश-यात्रा के दौरान स्वामी जी आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड गये तथा वहाँ की दिव्य जीवन संघ की शाखाओं तथा भक्तों द्वारा आयोजित बहुत से कार्यक्रमों और कामों में भाग लिया। आस्ट्रेलिया के सभी कार्यक्रम उस पावन दशक महोत्सवों की शृंखला में ही थे। उनका विचार उन सभी स्थानों पर भिन्न-भिन्न कार्यक्रम रखने का था जहाँ-जहाँ परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज दश वर्ष पूर्व अर्थात् १९९९ में द्वितीय यात्रा पर गये थे।

स्वामी जी ९ अप्रैल को सिडनी (आस्ट्रेलिया) पहुँचे। हवाई अड्डे पर दिव्य जीवन संघ, आस्ट्रेलिया के अध्यक्ष श्री विजय रत्नम्, उपाध्यक्ष श्री राधाकृष्ण शर्मा, सचिव श्री गुणवन्त वघेला, कोषाध्यक्ष श्री विजय गोकर्ण तथा बहुत से अन्य भक्तों ने स्वामी जी का भव्य स्वागत किया।

१० अप्रैल, गुड फ्राईडे को सिडनी की एक गहन भक्त महिला श्रीमती लक्ष्मी राव के निवास-स्थान पर सत्संग था। यह वार्षिक सत्संग था जिसमें लिवरपूल की एक भजन-मण्डली द्वारा भजन-कीर्तन के कार्यक्रम की भजन-सन्ध्या थी। यही मण्डली प्रत्येक शुक्रवार को क्रमशः अलग-अलग भक्तों के घरों में ऐसे सत्संग करती है। वहाँ भक्त जनों का पर्याप्त समूह था। स्वामी जी महाराज ने सत्संग में भाग लेते हुए 'दिव्य जीवन के महत्त्व, भक्ति और भक्तियोग तथा दिव्य नाम की महिमा' पर प्रवचन दिया।

विश्व हिन्दू परिषद्, आस्ट्रेलिया ने ११-१२ अप्रैल २००९ को द्वितीय आस्ट्रेलियन हिन्दू सम्मेलन सिडनी में आयोजित किया था, जिसका मूल विषय था 'विविध सम्प्रदायों के मध्य परस्पर भातृभाव को दृढ़ करके आस्ट्रेलिया को पुष्ट करना।' इसमें उन्होंने हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिक्ख तथा आदिवासी जातियों आदि को आमन्त्रित किया था। आर्ष विद्या संस्था के अध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे थे। श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज को सम्मेलन में आमन्त्रित किया गया था तथा ११ अप्रैल को उद्घाटन सत्र में शुभ-कामनाएँ देने का

अनुग्रह किया गया था। स्वामी जी महाराज ने सम्मेलन में भाग लेते हुए इसकी सफलता के लिए शुभ-कामनाओं का सन्देश दिया, जिसमें अखिल धर्म ऐक्य की आवश्यकता, एक ही परमात्मा की सन्तान और परस्पर भाई-भाई होने के नाते समस्त मानवता की एकता को जानने और उसका अनुमोदन करने तथा विविध धर्मोद्घोष तथा हिन्दू जाति के बीच परस्पर एकता और समरसता की भावना को बढ़ाने की अति आवश्यकता पर प्रकाश डाला, जिसकी सभी ने बहुत सराहना की।

उस दिन सायंकाल में श्री गुणवन्त वधेला जी के निवास पर भी सत्संग रखा गया था। इसमें स्वामी जी ने परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के 'समन्वययोग' पर प्रवचन दिया।

दशम वर्ष महोत्सव के मुख्य कार्यक्रम के रूप में आस्ट्रेलिया दिव्य जीवन संघ ने १२ अप्रैल को सिडनी में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया था। इसका उद्देश्य सिडनीवासियों में इसकी गतिविधियों और उद्देश्यों के सम्बन्ध में जागरूकता लाना भी था। बहुत से कलाकारों ने भक्ति संगीत नृत्य इत्यादि प्रस्तुत किया। अच्छी संख्या में लोग आये हुए थे। स्वामी जी महाराज के दिये गये संक्षिप्त सन्देश से लोगों को पर्याप्त प्रेरणा मिली। कार्यक्रम अत्यन्त भली प्रकार आयोजित किया गया था।

१३ अप्रैल को वोलिंगगैंग में दिव्य जीवन संघ, आस्ट्रेलिया की प्रबन्ध समिति की गोष्ठी रखी गयी थी, जिसमें सम्मिलित हो कर स्वामी जी महाराज ने अपने आशीर्षचन दिये।

फिर स्वामी जी कैनबरा गये। वहाँ १४ अप्रैल को नव-वर्ष, वैशाखी के उपलक्ष्य में श्री विष्णु-शिव मन्दिर, मॉसन, कैनबरा में सत्संग रखा हुआ था जिसमें सम्मिलित हो कर स्वामी जी ने 'नव-वर्ष के महत्त्व' पर तथा 'अपने वास्तविक निज स्वरूप को जान कर, अपने जीवन के परम लक्ष्यहृद्देश्वर-साक्षात्कार को प्राप्त करने की आवश्यकता'

पर प्रवचन दिया। सत्संग में पर्याप्त संख्या में भक्त जन उपस्थित थे। उसी दिन, नव-वर्ष मनाने के लिए ही टौरन्स में भी श्री अरुपदै मुरुगन मन्दिर में सत्संग था। स्वामी जी ने इसमें भी भाग लिया तथा 'भले बनो, भला करो' के सिद्धान्त पर प्रवचन दिया जिसकी भक्त-समुदाय ने बहुत सराहना की।

१५ अप्रैल को फ्लोरे, कैनबरा के हिन्दू टैम्पल एण्ड कल्चरल सैन्टर (एच. टी. सी. सी.) में सत्संग था। इस एच. टी. सी. सी. का परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के कर-कमलों द्वारा १९९९ में उद्घाटन हुआ था। सत्संग में स्वामी जी ने 'जीवन में सुख तथा सामंजस्य और धर्म के महत्त्व' पर प्रवचन दिया और भक्तों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के भी उत्तर दिये।

१६ अप्रैल को एच. टी. सी. सी. में वरिष्ठ नागरिकों के लिए 'जीवन में तनाव के बीच सन्तुलन तथा शिथिलीकरण की कार्यशाला' का कार्यक्रम रखा गया था। श्री स्वामी जी तथा श्री राधाकृष्ण शर्मा जी ने इस कार्यशाला का संचालन किया। मुख्य प्रस्तुति तथा प्रणालियाँ श्री शर्मा जी ने निर्देशित कीं। स्वामी जी ने कार्यशाला में सामान्य निर्देश दिये। ऐसी ही एक कार्यशाला १७ अप्रैल को आस्ट्रेलियन टैक्सेशन ऑफिस के पदाधिकारियों के लिए स्वामी जी और शर्मा जी द्वारा संचालित की गयी।

आस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी में १७ अप्रैल को ही स्वामी जी महाराज द्वारा 'दैनिक जीवन में आध्यात्मिकता' पर प्रवचन तथा उसके उपरान्त किये गये प्रश्नों के उत्तर देने का सत्र भी हुआ।

१८ अप्रैल को एच. टी. सी. सी. का वार्षिकोत्सव था, दश वर्ष पूर्व परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने यहाँ की मूर्तियों की स्थापना तथा प्राण-प्रतिष्ठा इसी दिन की थी। श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज का आस्ट्रेलिया आने का मुख्य उद्देश्य इसी कार्यक्रम में भाग लेना था। बड़ी संख्या में भक्त जन यहाँ एकत्रित थे। स्वामी जी ने इस अवसर पर प्रवचन

आशीर्वचन दिये तथा साथ ही बहुत से भक्तों के घरों में आयोजित किये गये सत्संगों में भाग ले कर प्रवचन दिये।

सभी कार्यक्रम आदरणीय श्री राधाकृष्ण शर्मा, उपाध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ, आस्ट्रेलिया द्वारा अत्यन्त भली-भाँति आयोजित किये गये थे। इन कार्यक्रमों के द्वारा जिज्ञासु साधकों, भक्तों को बहुत प्रेरणा मिली तथा सर्वत्र एक जीवन्त आध्यात्मिक वातावरण छा गया।

इसके पश्चात् स्वामी जी १९ अप्रैल को पर्थ के लिए रवाना हुए। वहाँ हवाई अड्डे पर श्रीमती और श्री टी. गुनालन ने उनका हार्दिक स्वागत किया। २० अप्रैल को गुनालन दम्पति के निवास-स्थान पर सत्संग था जिसमें पर्याप्त संख्या में भक्त जन उपस्थित थे। स्वामी जी महाराज ने 'गुरुदेव की शिक्षाओं तथा जीवन में सुख का मार्ग और ईश्वर-साक्षात्कार' पर प्रवचन दिया।

२१ अप्रैल को 'इन्टेग्रल योगा सेंटर', शिवानन्द आश्रम, बीकॉसफील्ड, फ्रेमेंटल में ब्राह्ममुहूर्त में ध्यान कक्षा थी। स्वामी जी ने इसमें भाग लेते हुए ध्यान के निर्देश दिये तथा साधकों को ध्यान सम्बन्धी कतिपय मुख्य बातें भी बतायीं।

उसी दिन पर्थ में मंडाला हॉल, बेटमैन में पर्थ वेदान्त केन्द्र के द्वारा एक सत्संग भी स्वामी जी के लिए रखा गया। यहाँ भक्तों तथा साधक जिज्ञासुओं की पर्याप्त संख्या में उपस्थिति थी। स्वामी जी ने इसमें 'ईश्वर की विद्यमानता की साधना' पर प्रवचन दिये, जिसकी श्रोताओं ने बड़ी सराहना की। साधकों के प्रश्नों के भी स्वामी जी ने उत्तर दिये।

२२ अप्रैल को कैनिंगवैल, पर्थ के हिन्दू टैम्पल के यूथ ग्रुप ने जन-साधारण के लिए एक सत्संग आयोजित किया था। इसका विषय था 'मानव के लिए गीता का सन्देश'। स्वामी जी ने इस विषय पर प्रवचन तथा प्रश्नों के उत्तर भी दिये।

आस्ट्रेलिया से स्वामी जी न्यूजीलैंड गये। ऑकलैंड में श्री वासुदेव जी तथा श्री क्रिष्णा मूदली जी ने उनका हार्दिक

स्वागत किया। २४ अप्रैल को श्री क्रिष्णा जी के निवास पर सत्संग था जिसमें पर्याप्त संख्या में भक्त जन पधारे हुए थे। प्रार्थना, बातचीत और भजन-कीर्तन के उपरान्त स्वामी जी ने शिवानन्द जी का 'भले बनो, भला करो' सिद्धान्त पर प्रवचन दिया जिसे सुन कर भक्त अति आनन्दित हुए।

२५ अप्रैल को श्री वासुदेव जी के निवास पर सत्संग हुआ, जिसमें स्वामी जी ने 'सुख और मानसिक शान्ति के लिए आध्यात्मिकता' विषय पर भक्तों के लिए प्रेरणाप्रद और लाभप्रद प्रवचन दिया।

२५ अप्रैल को ही पॉन्सौबी, ऑकलैंड के फ्रीमैन्स कौमुनिटी हॉल में मुत्तमिल संगम द्वारा चित्थरै फेस्टीबल (नव-वर्ष दिवस) मनाया जा रहा था। अध्यक्ष, श्री लांगों कृष्णामूर्ति के अनुग्रह पर स्वामी जी इसमें सम्मिलित हुए तथा अपनी शुभ-कामनाएँ और संक्षिप्त प्रवचन दिये जिससे श्रोता बहुत प्रसन्न हुए।

२६ अप्रैल को आकलैंड के पापाटोटो में ग्रेट साउथ रोड पर स्थित 'आयुर्वेदिक और योग केन्द्र' में सत्संग आयोजित किया गया, जिसमें पर्याप्त संख्या में भक्त जन उपस्थित थे। स्वामी जी ने इस सत्संग में सम्मिलित होते हुए (स्वास्थ्य और आराम के लिए योग) 'योगा फ़ार रिलैक्सेशन एण्ड वेलबींग' पर प्रवचन दिये। उसी दिन स्वामी जी श्री के एण्ड जे मूदली द्वारा संचालित मानुरवा में किप मॅकग्राथ एजुकेशन सेंटर देखने भी गये।

२७ अप्रैल को वेलपार्क कॉलेज, ग्रेलिन, आकलैंड में एक सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया था। उसमें भाग लेते हुए स्वामी जी ने 'अनेक मार्ग, एक सत्य' विषय पर प्रवचन दिया।

२८ अप्रैल को आश्रम योगा, पारनेल, एण्ड आकलैंड में एक सत्संग था जहाँ भारी संख्या में भक्त जन उपस्थित थे। यहाँ पर स्वामी जी ने 'अच्छे स्वास्थ्य के लिए योग और ध्यान' विषय पर प्रेरणाप्रद, प्रशंसनीय प्रवचन दिया।

२९ अप्रैल को पापाकुरा में श्री क्रिब्बा मूदली के घर पर सत्संग था। स्वामी जी इसमें सम्मिलित हुए तथा 'आध्यात्मिकता के लिए दैनिक साधनाएँ' विषय पर प्रवचन दिया जिसकी भक्तों ने बहुत श्लाघा की।

न्यूजीलैंड के लगभग सभी कार्यक्रम दिव्य जीवन संघ, न्यूजीलैंड की ओर से श्री क्रिब्बा मूदली और श्री वासुदेव जी द्वारा आयोजित किये गये थे। ये सब अत्यन्त भली-भाँति आयोजित किये गये थे, सबके लिए अत्यन्त प्रेरणाप्रद तथा हर्षवर्धक थे।

न्यूजीलैंड से स्वामी जी पुनः आस्ट्रेलिया आ गये। ३० अप्रैल को मेलबोर्न हवाई अड्डे पर हमारे आश्रम के भक्त श्री पी. बी. शाह और श्री आकाश रणदेव ने स्वामी जी का हार्दिक स्वागत किया। श्री संजय मिश्रा, जिनके निवास-स्थान पर दिव्य जीवन संघ का नियमित रूप से सत्संग होता है, अब १ से ३ मई तक दैनिक सत्संग था। १ मई के सत्संग में स्वामी जी ने गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के 'समन्वययोग तथा दिव्य जीवन जीने' के विषय पर उपदेशों के सम्बन्ध में प्रवचन दिया। अगले दिन स्वामी जी ने 'कर्म का सिद्धान्त तथा कर्मफल के कष्टों पर विजय' तथा 'पुनर्जन्म' और 'भले बनो, भला करो की साधना का फल' विषय पर प्रवचन दिया। ३ मई के सत्संग में उन्होंने 'हिन्दू धर्म में देवी-देवताओं की संख्या' तथा 'आधुनिक टेक्नोलौजी में सब ज्ञान उपलब्ध होते हुए गुरु और सत्संग की आवश्यकता' तथा 'पश्चिमी जगत् में भारतीय संस्कृति को कैसे बनाये रखा जाये' पर प्रवचन दिये।

मेलबोर्न के सभी कार्यक्रम श्री पी. बी. शाह तथा श्री संजय मिश्रा द्वारा आयोजित किये गये थे। सभी कार्यक्रम भली-भाँति सम्पन्न हुए।

४ मई को स्वामी जी सिडनी वापस आ गये। ५ मई को श्रीमती आशा गुप्ता के आवास पर हुए सत्संग में स्वामी जी ने 'गृहस्थों के जीवन में धर्म का महत्त्व तथा सत्संग की महिमा' पर प्रवचन दिया। ६ मई को श्री वासुदेव तथा श्रीमती नागवेनी के घर सत्संग था, जिसमें स्वामी जी ने 'गुरुदेव के बीस

आध्यात्मिक नियम तथा उनकी दैनिक जीवन में साधना' पर प्रशंसनीय प्रवचन दिया।

७ से १० मई तक दिव्य जीवन संघ, सिडनी ने स्वामी जी के प्रवचनों की शृंखला आयोजित की थी। ७ मई को स्वामी जी ने 'आध्यात्मिकताहृद्दैनिक जीवन के तनाव के नियन्त्रण में सहायक' विषय पर रैग बिरन हॉल, वैटवर्थ विलो में प्रवचन दिया जहाँ पर्याप्त संख्या में भक्त उपस्थित थे। ८ मई को प्रवचन का विषय था 'हम जैसा सोचते हैं, वैसा बनते हैं।' ९ मई को श्रीमती और श्री जगन्नाथ राव के निवास-स्थान पर सत्संग में विषय था, 'शरणागतिहृद्दएक पूर्ण योग, तथा भक्त के जीवन में ज्ञान का औचित्य'। १० मई का सत्संग, जो कि रैग बिरन हॉल में था, प्रवचन का विषय था, 'आध्यात्मिकता का व्यावहारिक पक्षहृद्दवर्तमान में जीना।' सभी प्रवचन श्रोताओं के लिए प्रेरणाप्रद तथा हर्षवर्धक रहे।

स्वामी जी दिव्य जीवन संघ, आस्ट्रेलिया के तत्त्वावधान में श्रीमती आशा गुप्ता द्वारा संचालित हिन्दी कक्षा के विद्यार्थी बच्चों से होम बुश बॉयज़ स्कूल, मैकेंजी रोड पर ९ मई को मिले तथा उन्हें सम्बोधित भी किया। वे बहुत से भक्तों के निवास-स्थानों पर भी गये तथा आशीर्वाद दिये।

आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड में विभिन्न स्थलों पर सभी किये गये कार्यक्रम दिव्य जीवन संघ, आस्ट्रेलिया के सचिव श्री गुणवन्त वघेला जी द्वारा आयोजित किये गये थे। इसमें उपाध्यक्ष श्री राधाकृष्ण शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री विजय गोकर्ण तथा अन्य स्थानीय लोगों और भक्तों द्वारा सहायता दी गयी थी। सभी कार्यक्रम अत्यन्त भली-भाँति सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए तथा सभी के लिए उत्साहवर्धक, प्रेरणाप्रद तथा प्रसन्नता प्रदान करने वाले रहे तथा आध्यात्मिक ज्ञान प्रदाता रहे। स्वामी जी महाराज का हरेक स्थान पर आवास अत्यन्त सुखद और सुविधाजनक रहा। इस सबके लिए स्वामी जी ने दिव्य जीवन संघ, आस्ट्रेलिया तथा समस्त भक्त-समुदाय को हार्दिक धन्यवाद दिया।

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज २४ से २९ मई २००९ तक की एक संक्षिप्त सांस्कृतिक यात्रा पर उड़ीसा गये। ब्रह्मचारी श्री मलय जी भी उनके साथ थे।

दिव्य जीवन संघ, भुवनेश्वर शाखा ने अपनी शाखा के भवन में २४ मई २००९ को एक सत्संग का आयोजन किया था। श्री स्वामी जी शाखा में गये और एकत्रित श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए 'अपनी सन्तान को उत्तम संस्कार प्रदान करते हुए लालन-पालन करने में माताओं की भूमिका' विषय पर प्रवचन दिया। साथ ही 'वर्तमान परिस्थितियों में गुरुदेव का मिशन तथा उसके महत्त्व' पर भी बोले।

२६ मई २००९ को दिव्य जीवन संघ, उड़ीसा की शाखाओं के प्रतिनिधि श्री स्वामी जी को बधाई देने के लिए तथा उन्हें शाखाओं की गतिविधियों से अवगत कराने के लिए चिदानन्द हर्मिटेज शान्ति आश्रम, बालिगुआली, पुरी में एकत्रित हुए। प्रो. ह्रुदानन्द रे ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। चिदानन्द हर्मिटेज शान्ति आश्रम के प्रभारी श्री स्वामी जितमोहनानन्द जी, श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी, श्री बिप्रचरण पात्र, श्री कैलाश चन्द्र साहूजी, श्री भागीरथी महापात्र, श्री गौरहरि मिश्रा जी तथा अन्य वरिष्ठ भक्तों ने मीटिंग में भाग लिया। स्वामी जी महाराज ने प्रतिनिधियों से विचार-विमर्श किया तथा उन्हें शाखाओं के कार्य को

भली-भाँति विकसित करने के लिए व्यापक निर्देश दिये और गुरुदेव के सन्देश के प्रचार-प्रसार का महत्त्व भी बताया। यह मीटिंग शाखाओं को प्रेरणा देने में सफल रही।

२७ मई को स्वामी जी दिव्य जीवन संघ, पुरी शाखा में गये। सत्संग में स्वामी जी ने 'भक्ति-साधना' पर प्रवचन दिये तथा युवा-वर्ग को परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की शिक्षाओं और सन्देशों को प्रसारित-प्रचारित करने हेतु आगे बढ़ कर भाग लेने को कहा। २८ मई को स्वामी जी कटक गये और वहाँ की शाखा द्वारा आयोजित सत्संग में भाग लेते हुए भक्तों को आशीर्वचन कहे।

२९ मई को, दिल्ली वापस लौटने से पहले श्री स्वामी जी दिव्य जीवन संघ, खण्डगिरि शाखा तथा 'शिवानन्द सेन्टेनरी बॉयज़ हाई स्कूल, खण्डगिरि, भुवनेश्वर भी गये। श्री स्वामी जी के स्वागत-सम्मानार्थ स्कूल के विद्यार्थियों, प्राध्यापकों तथा प्रबन्ध समिति ने एक सत्संग आयोजित किया था। श्री स्वामी जी महाराज ने सत्संग में शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली पर प्रवचन दिया।

दिव्य जीवन संघ की अनेकों शाखाओं वाले उड़ीसा प्रान्त में पूज्य स्वामी जी महाराज की इस संक्षिप्त सांस्कृतिक यात्रा के द्वारा गुरुदेव के सन्देशों के प्रचार-प्रसार के लिए शाखाओं को सक्रियता प्राप्त हुई।

श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

गुर्जर दिव्य जीवन संघ समिति (दिव्य जीवन संघ, गुजरात शाखाओं की समन्वय समिति) के आमन्त्रण पर श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज दिव्य जीवन संघ मुख्यालय की ओर से बालकों और किशोरों के लिए पाँच दिवसीय कोर्स करने के लिए अप्रैल और मई २००९ माह में गुजरात प्रान्त गये। यह कोर्स क्रमशः वडोदरा, भावनगर, सुरेन्द्रनगर, जामनगर और अहमदाबाद में किये गये। १२ से १८ वर्ष की

बीच की आयु के हहजिनका मानसिक स्तर ८ वीं कक्षा के बराबर का थाहहके लगभग २२५ बच्चों ने इनमें भाग लिया।

प्रत्येक कोर्स ५ दिन का रखा गया था। दैनिक कार्यक्रम प्रातः ६.३० बजे योगकक्षाओं से आरम्भ होता था। उसके उपरान्त गीता, भारतीय संस्कृति तथा दिव्य जीवन के व्यावहारिक ढंग पर प्रवचन और भाषण रखे गये थे, जिसके साथ-साथ कहानियों और शिक्षाप्रद खेलों के सत्र (दिन में २

बार) भी दैनिक कार्यक्रम में सम्मिलित थे। कोर्स की समाप्ति प्रतिदिन 'बच्चों के कार्यक्रम' से होती थी। यह कार्यक्रम विशेष रूप से इसलिए रखा गया था कि भाषण देने और गायन इत्यादि के गुण बच्चों में हों तो उनका प्रकटीकरण हो सके।

योगकक्षाओं, गीता की कक्षाओं, दिव्य जीवन के व्यावहारिक उपायों तथा कहानी सुनाने के सत्र स्वामी जी द्वारा संचालित किये गये। भारतीय संस्कृति तथा बच्चों के लिए अन्य उपयोगी विषयों, जैसे वैदिक गणित, साहसिक कार्य, स्वास्थ्य, देशप्रेम तथा जीवन के उच्चतर मूल्यों इत्यादि पर स्थानीय अतिथि वक्ताओं को आमन्त्रित किया गया था। कुछ अतिथि वक्ताओं ने शिक्षाप्रद खेलों का भी संचालन किया।

भाग लेने वाले बच्चों के लिए एक दैनन्दिनी भी विशेष रूप से तैयार की गयी थी। इसमें 'करें' और 'न करें' से सम्बन्धित ३६ ऐसे बिन्दु सम्मिलित किये गये थे जो बच्चों के दिव्य जीवन जीने में सहायता प्रदान करने वाले थे। यह दैनन्दिनी इस प्रकार तैयार की गयी थी कि बच्चे अपनी आध्यात्मिक उन्नति को स्वयं जाँच सकें। दैनन्दिनी का उपयोग कैसे किया जाये, यह स्वामी जी ने बच्चों को बताया। उन्होंने बच्चों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया कि वह अपने दैनिक कामों में दैनन्दिनी लिखने का स्वभाव बना लें।

स्वामी जी ने बच्चों को जपमाला को व्यवहार में लाना तथा लिखित जप करना भी सिखाया। उनमें से बहुत से बच्चों

ने माला से और कापी में लिख कर भी जप करना आरम्भ कर दिया था। अहमदाबाद के कोर्स के समय भोजन करने के पूर्व तथा पश्चात् के मन्त्रोच्चारण सिखा कर, स्वामी जी ने भोजन के ही समय पर बच्चों को उचित ढंग से भोजन की विधि समझायी।

सभी कोर्सों के समय बच्चों को प्रातःकालीन नाश्ता, दोपहर का भोजन और अपराह्न का नाश्ता दिया जाता था।

गुर्जर दिव्य जीवन संघ समिति ने इस अवसर पर 'बालकों के लिए दिव्य जीवन सन्दर्शिका' पुस्तिका वितरित की। अहमदाबाद दिव्य जीवन संघ शाखा ने भी 'स्वाध्याय' शीर्षक से एक गुजराती पुस्तिका प्रकाशित की।

कोर्स के प्रत्येक भागीदार को दिव्य जीवन सम्बन्धी साहित्य तथा निम्नलिखित वस्तुओं का सैट दिया गया :

उपर्युक्त पुस्तिकाएँ, गीता, दिव्य जीवन सम्बन्धी गुजराती साहित्य, कापी, पैन, लिखित मन्त्र के लिए कापी, जपमाला।

इन कोर्सों के पूर्ण होने के पश्चात् स्वामी जी दिव्य जीवन संघ की गान्धीनगर शाखा द्वारा आयोजित तीन दिवसीय आध्यात्मिक सम्मेलन में सम्मिलित हुए जो २५ मई २००९ को समाप्त हुआ।

अपने दैनिक कार्य ऐसे करें!

आपको प्रतिदिन जो भी कार्य करने हों, उन्हें एक विशेष भाव से करें। कहेंहह 'भगवान्! मेरा हर काम ही मेरा फूल, बिल्व-पत्र तथा तुलसी-दल है; चन्दन, कुमकुम, अर्चना और आरती है। यह लो, मेरी पूजा स्वीकार करो।' इस भाव के साथ अपना कार्य करेंगे, तो वही पूजा और भजन बन जायेगा। आपका कार्यक्षेत्रहहघर, कार्यालय, दुकान, खेत-खलिहानहहप्रभु का मन्दिर बन जायेगा। प्रभु आपको घर में ही दर्शन देंगे। आपका दैनिक जीवन यापन ही आपकी साधना बन जायेगा। आपका ऐसा जीवन शान्ति, शक्ति और आनन्द का आगार बन जायेगा।

स्वामी चिदानन्द

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अहिवारा (छत्तीसगढ़): शिवरात्रि के पावन अवसर पर विशेष रुद्राभिषेक किया गया। प्रत्येक एकादशी पर विश्व-शान्ति के लिए एक माला महामृत्युंजय मन्त्र की की गयी।

अम्बाला (हरियाणा): नियमित साप्ताहिक सत्संग तथा दैनिक इष्टदेवता की स्तुति के साथ ही दैनिक होम्योपैथिक सेवा एवं जल सेवा जारी रही।

बड़कुंआल (उड़ीसा): नियमित मासिक सत्संग एवं साप्ताहिक पादुका-पूजा, दैनिक पूजा तथा सहस्रनाम अर्चना की जा रही है। सायंकालीन सत्संग में भजन-कीर्तन नियमित रूप से चल रहे हैं।

बरबिल (उड़ीसा): चार साप्ताहिक सत्संग और चार सचल सत्संग तथा पहले की ही तरह होम्योपैथिक क्लिनिक द्वारा ४४३ रोगियों की सेवा चल रही है।

बैंगलोर (कर्नाटक): नवरात्रि उत्सव के उपलक्ष्य में रामायण पर प्रवचन गुरुदेव के कृतत्व के सन्दर्भ में रखे गये। १८ अप्रैल को परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज द्वारा इन्टरनेट का शाखा में शुभारम्भ किया गया।

बल्लारि (कर्नाटक): ३ अप्रैल २००९, रामनवमी के दिन विशेष सत्संग, २६ अप्रैल को परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज का जयन्ती महोत्सव, विश्व-शान्ति के लिए प्रत्येक सत्संग के समापन पर महामृत्युंजय मन्त्र, महामन्त्र, शान्ति-मन्त्र और प्रार्थना तथा मंगल आरती के पश्चात् ज्ञान प्रसाद और प्रसाद वितरण किया गया।

भिलाई नगर (छत्तीसगढ़): सत्संग तथा मातृ सत्संग नियमित रूप से चलते रहे।

भीमकाण्ड (उड़ीसा): रविवार को साप्ताहिक सत्संग तथा १४ अप्रैल, हनुमान जयन्ती को २४ घण्टे अखण्ड हनुमान चालीसा का पारायण किया गया।

बीकानेर (राजस्थान): वसन्त नवरात्रि और हनुमान जयन्ती पर विशेष सत्संग तथा परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज के बीकानेर आगमन पर अक्षय तृतीया को यज्ञशाला

के उद्घाटन के शुभ अवसर पर २६ से २८ अप्रैल २००९ तक विशेष सत्संगों की शृंखला आयोजित की गयी। नियमित सत्संग तथा योगासन कक्षाएँ पहले की तरह चलती रहीं।

बुर्ला (उड़ीसा): श्री रामनवमी, हनुमान जयन्ती, आदि शंकराचार्य जयन्ती तथा बुद्ध पूर्णिमा पर विशेष सत्संग, तथा नियमित रूप से साप्ताहिक सत्संग शाखा परिसर में चलते रहे।

छत्रपुर (उड़ीसा): पाँच साप्ताहिक सत्संग, दैनिक सायंकालीन सत्संग, चार विशेष सत्संग तथा शाखा परिसर में रामनवमी का उत्सव मनाया गया।

फरीदपुर (उत्तर प्रदेश): हर बुधवार को साप्ताहिक सत्संग, ७ मई को परम पूज्य श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि पर विशेष भण्डारा और अन्न दान तथा सायंकालीन सत्संग में महामृत्युंजय यज्ञ भी किया गया।

गान्धीनगर (गुजरात): सप्ताह में तीन बार नियमित सत्संग, पुरुष और महिला वर्ग के लिए अलग-अलग दैनिक योगासन कक्षाएँ, माह में दो बार होम्योपैथिक क्लिनिक सेवा तथा कुष्ठ बस्ती में आर्थिक सहायता नियमित रूप से चलती रही। ८ मार्च को नारायण सेवा, २४ मार्च को बाल नारायण सेवा, प्रथम मार्च को गायत्री हवन तथा रामनवमी और हनुमान जयन्ती विशेष कार्यक्रम रहे।

जयपुर, राजा पार्क (राजस्थान): ३ अप्रैल को रामनवमी, ९ को हनुमान जयन्ती, २० से २६ अप्रैल तक रामकथा; पूज्य श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि आराधना पर अप्रैल-मई माह में भागवत कथा की गयी। नियमित कार्यक्रमों में हहदैनिक प्रातःकालीन प्रवचन देवी भागवत, सायंकालीन सत्संग, हर शनिवार को सुन्दरकाण्ड पाठ, रविवार प्रातःकालीन सत्संग, होम्योपैथिक क्लिनिक द्वारा स्वास्थ्य सेवाएँ, योग कक्षाएँ और आध्यात्मिक पुस्तकालय द्वारा सेवाएँ चल रही हैं। विधवा महिलाओं को आर्थिक सहायता, दैनिक नारायण अन्नक्षेत्र सेवा, कुष्ठ रोगियों की सेवा तथा गरीब बच्चों को आर्थिक सहायता भी नियमित रूप से जारी है।

जयपुर (उड़ीसा): दैनिक पूजा, साप्ताहिक सत्संग शाखा परिसर में तथा सचल सत्संग भक्तों के निवास स्थान पर भी; १९ अप्रैल को गीता यज्ञ; २५ अप्रैल को परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की जयन्ती पर उत्सव; तथा २९ अप्रैल को आदि शंकराचार्य जयन्ती मनायी गयी।

खेडब्रह्मा (गुजरात): श्री अम्बाती मन्दिर में आश्रम स्तोत्र और गुरु स्तोत्र सहित सत्संग तथा ज्ञान प्रसाद वितरण पहले की तरह ही चलता रहा।

खुरजा (उत्तर प्रदेश): महिला और पुरुष वर्ग के लिए अलग-अलग योगासन कक्षाएँ; साप्ताहिक सत्संग; एकादशी सत्संग, ज्ञान प्रसाद वितरण, रोगिणी और गरीब माताओं को आर्थिक सहायता दी गयी। १८ और २० अप्रैल को तीन दिवसीय स्वास्थ्य-सुरक्षा शिविर आयोजित किया गया।

लंगथाबल (मणिपुर): ९ मई को भगवान् बुद्ध के जीवन और शिक्षाओं पर आध्यात्मिक प्रवचन रखा गया जिसके समापन पर विश्व-शान्ति के लिए प्रार्थनाएँ की गयीं।

माधवपट्टनम् (आन्ध्र प्रदेश): योग कक्षाएँ नियमित रूप से, साप्ताहिक सत्संग तथा होम्योपैथिक स्वास्थ्य सेवा रविवार को पहले की तरह चलते रहे।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): ब्राह्ममुहूर्त सत्संग नियमित रूप से, साप्ताहिक सचल सत्संग, मातृ सत्संग हर शनिवार और एकादशी को, ३ फरवरी को महामृत्युंजय कीर्तन, ३ अप्रैल को १२ घण्टे अखण्ड हनुमान चालीसा पाठ और समापन हवन से किया गया।

वसन्त बिहार, नई दिल्ली : अप्रैल मास में चार साप्ताहिक सत्संग किये गये।

पटियाला (पंजाब): २४ मई को नियमित मासिक सत्संग तथा स्थानीय गोशाला चलाने के लिए धन संग्रह किया गया।

फूलबानी (उड़ीसा): शाखा में सत्संग और पादुका पूजा नियमित रूप से; ८, २३ और २४ अप्रैल को पादुका पूजाएँ अलग से; साप्ताहिक सत्संग और सचल सत्संग; २८ अप्रैल को नारायण सेवा (अन्नदान) किया गया।

रायगढ़ (छत्तीसगढ़): ३ और ९ अप्रैल को क्रमशः श्री हनुमान जयन्ती और श्री रामनवमी मनाये गये।

रायपुर (छत्तीसगढ़): अप्रैल माह में साप्ताहिक सत्संग नियम से; ३ से ५ अप्रैल तक श्री रामनवमी उत्सव तथा ९ अप्रैल को हनुमान जयन्ती मनाने के उपरान्त भण्डारा किया गया।

राउरकेला (उड़ीसा): साप्ताहिक सत्संग; दैनिक ध्यान, योग और प्राणायाम कक्षाएँ; ८ और २४ अप्रैल को पादुका पूजा तथा होम्योपैथिक स्वास्थ्य सेवाएँ नियमित रूप से चलती रहीं। अप्रैल माह में विशेष कार्यक्रम श्री रामनवमी, हनुमान जयन्ती और परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज के जन्म जयन्ती उत्सव मनाये गये। मासिक पत्रिका के प्रकाशन तथा अन्नपूर्णा भवन-निर्माण का कार्य चलता रहा।

सालेपुर (उड़ीसा): पहले की तरह ही नियमित प्रातः व सायं सत्संग, विशेष साप्ताहिक पूजा-पाठ उस दिन के इष्टदेवता के लिए किये गये। श्री रामनवमी, हनुमान जयन्ती, पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जयन्ती, आदि शंकराचार्य जयन्ती और रामानुजाचार्य जयन्ती मनायी गयीं। धर्मार्थ चिकित्सा केन्द्र द्वारा २६० से अधिक रोगियों को सेवा उपलब्ध करायी गयी।

सुनाबेडा महिला शाखा (उड़ीसा): दैनिक सायंकालीन तथा साप्ताहिक सत्संग, रामनवमी और हनुमान जयन्ती को विशेष सत्संग किये गये।

सुनाबेडा (उड़ीसा): सायंकालीन सत्संग नियमित रूप से, पुरुष वर्ग और महिलाओं के लिए पृथक्-पृथक् योगासन कक्षाएँ, श्री रामनवमी, हनुमान जयन्ती तथा श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की जयन्ती मनायी गयी।

वडोदरा (गुजरात): साप्ताहिक सत्संग, ८ और २४ को मन्त्रजप और गुरुपादुका पूजा द्वारा शिवानन्द दिवस और चिदानन्द दिवस मनाये गये। पूज्य श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज द्वारा आध्यात्मिक जीवन पर सार्वजनिक प्रवचन तथा 'बच्चों के लिए दिव्य जीवन' पर पाँच दिवसीय विशेष कार्यक्रम तथा श्री जितेन्द्रभाई पण्डित द्वारा निर्देशित ध्यान सत्र का संचालन किया गया।

आवश्यक सूचना

शिवानन्द आश्रम, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, ऋषिकेश में अतिथियों एवं अभ्यागतों-आगन्तुकों के स्वागतार्थ वर्तमान समय की माँग तथा सरकारी एजेंसियों की अपेक्षाओं-आदेशों के अनुसार हम कुछ नियमों-शर्तों के परिपालन के लिए बाध्य हैं।

शिवानन्द आश्रम मूलतः संन्यास आश्रम/एक आध्यात्मिक संस्था है, जहाँ के अन्तेवासी संन्यासी, ब्रह्मचारी और आध्यात्मिक साधना में रत साधक हैं। वे निष्काम सेवा करते हैं और दिनानुदिन के कार्यक्रमों में सामूहिक रूप से सम्मिलित हो कर तथा अपनी आध्यात्मिक साधना की तरंगों से तरंगित वातावरण को तथा आश्रम की पवित्रता को बनाये रखने में प्रयत्नशील रहते हैं।

आश्रम में कुछ समय ठहरने वाले अतिथियों एवं अभ्यागतों से आशा की जाती है कि वे आश्रम के आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल ही अपनी आश्रमवास-अवधि का आध्यात्मिकरण करें। पर्यटकों, सप्ताहान्त छुट्टी मनाने वालों तथा मात्र मौजमस्ती करने वालों को आश्रम में ठहरने की सुविधा प्राप्त करने की प्रत्याशा नहीं रखनी चाहिए। वे किसी अन्य स्थान पर ठहरें और आश्रम-दर्शनार्थ तथा प्रार्थना, ध्यान तथा योग आदि के लिए ही आश्रम में आयें।

अतिथियों तथा अभ्यागतों के लिए दिशा-निर्देशन

(१) अतिथियों तथा अभ्यागतों को आश्रम में ठहरने की पूर्व-अनुमति प्राप्त करने के लिए महासचिव को पत्र, ई-मेल आदि के द्वारा पर्याप्त समय पूर्व अग्रिम सूचना देनी होगी, ताकि वे रवाना होने से पूर्व ही अनुमति-पत्र प्राप्त कर सकें। आश्रम-वास की अनुमति-प्राप्ति के लिए आवेदन-पत्र का प्रारूप निम्नलिखित अनुसार होगा :

१. पूरा नाम
२. लिंग और आयु
३. राष्ट्रियता
४. निवास-स्थान/घर का पूरा पता
५. ई-मेल का पता
६. कोड सहित टेलीफोन/सैल नम्बर
७. पासपोर्ट/फोटो आइडी टाइप और नम्बर*
८. आपके परिचित आश्रमवासी का नाम/सम्बन्ध

*स्वागत-कार्यालय (Reception Office) में पहुँचने पर आपको पासपोर्ट अथवा कोई फोटो पहचान-पत्र अवश्यमेव प्रस्तुत करना होगा। यह सरकारी नियमानुसार आवश्यक जरूरत है।

९. व्यवसाय-नौकरीपेशा तथा संक्षिप्त आध्यात्मिक पृष्ठभूमिका

१०. क्या आप दिव्य जीवन संघ से सम्बद्ध हैं? तो किस रूप में, कैसे?

११. आगमन का उद्देश्य

१२. आपके साथ आने वालों की संख्या (उनके नाम, लिंग और आयु उल्लेख सहित)

१३. आगमन की तिथि-तारीख

१४. प्रस्थान की तिथि-तारीख

(२) आश्रम-आवास के लिए फोन पर अनुमति लेना मान्य नहीं होगा।

(३) अतिथियों तथा अभ्यागतों को स्वागत-कार्यालय द्वारा जो आवास-स्थान दिया जायहहपूर्ण सहयोग सहित उसके साथ उन्हें एडजस्ट करना होगा।

(४) आश्रम-वास करते हुए अतिथियों तथा अभ्यागतों को आश्रम के समस्त कार्यक्रमों में उपस्थित रहना होगा; विशेष रूप से प्रातः ध्यान-कक्षा में और रात्रि-सत्संग में।

(५) अतिथियों-अभ्यागतों को अपने मूल्यवान् सामान का ध्यान स्वयमेव रखना होगा। किसी भी प्रकार की हानि-नुकसान के लिए आश्रम-प्रबन्धन उत्तरदायी नहीं होगा।

(६) स्वागत-कार्यालय का नियत कार्य-समय प्रातः ६ बजे से रात्रि १० बजे तक है। रात्रि १० बजे से प्रातः ६ बजे तक कार्यालय बन्द रहेगा। अतः अतिथियों-अभ्यागतों से अनुरोध है कि वे अपनी यात्रा का कार्यक्रम इस प्रकार सुनिश्चित करें कि वे स्वागत-कार्यालय के कार्य-समय के अन्दर ही आश्रम में पहुँचें।

(७) बिना पूर्व-सूचना दिये एवं पूर्व-अनुमति लिये आश्रम में ठहरने हेतु आने वाले अतिथियों तथा अभ्यागतों के अनुरोध पर गौर नहीं किया जायेगा।

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के लिए सूचना

शिवानन्द आश्रम, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, ऋषिकेश आने वाले अतिथियों-अभ्यागतों की सिफारिश करने वाली शाखाओं से अनुरोध है कि वे उपर्युक्त दिशा-निर्देशों का अनुपालन करें।

शाखाएँ अपने सदस्यों/भक्तों का आश्रम मुख्यालय में आने के लिए सिफारिश सदा कर सकती हैं, किन्तु पूर्व अग्रिम सूचना देने और अनुमति-स्वीकृति-प्राप्ति सुनिश्चित हो।

बिना पूर्व-सूचना दिये एवं पूर्व-अनुमति प्राप्त किये शाखाओं से सिफारिशी पत्र लाने पर भी मुख्यालय में आवास-उपलब्धि हेतु आने वाले सदस्यों, भक्तों, अतिथियों और अभ्यागतों को आश्रम में ठहरने की (स्वीकृति) अनुमति प्राप्त नहीं हो सकेगी।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

सूचना

दिव्य जीवन संघ, गुजरात का राजकोट में साधना शिविर

दिव्य जीवन संघ, गुजरात प्रान्त का वार्षिक साधना शिविर इस वर्ष ३० अक्तूबर से १ नवम्बर २००९ तक राजकोट (गुजरात) में हो रहा है।

परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज (परमाध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय), परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज (महासचिव) तथा शिवानन्द आश्रम मुख्यालय, ऋषिकेश से अन्य वरिष्ठ स्वामी जी अपनी पावन उपस्थिति से इस शुभ अवसर की शोभा बढ़ायेंगे।

अपने नाम पंजीकरण के लिए कृपया सम्पर्क करें हहृश्री जनकभाई पी. मेहता, ऑर्गनाइज़र, दिव्य जीवन संघ, राजकोट, 'शिवानन्द भवन', ६/९ जंक्शन प्लाट, राजकोट हहृ३६० ००१ (गुजरात); दूरभाष : ०२८१-२४७७०१०, २४४२९४०; मोबाइल : ०९८२५०८२२४५

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

केवल भारत में लागू

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के सदस्यता-शुल्क की एवं शाखाओं के सम्बद्धता-शुल्क की दरें

१. नवीन सदस्यता-शुल्क	रु. १५०/-
प्रवेश-शुल्क रु. ५०/-	
सदस्यता-शुल्क रु. १००/-	
२. सदस्यता नवीकरण-शुल्क (वार्षिक)	रु. १००/-
३. आजीवन सदस्यता-शुल्क	रु. ३,०००/-
४. संरक्षकता-शुल्क	रु. १०,०००/-
५. नयी शाखा खोलने का शुल्क*	रु. १०००/-
प्रवेश-शुल्क रु. ५००/-	
सम्बद्धता-शुल्क रु. ५००/-	
४. शाखा-सम्बद्धता (नवीकरण) शुल्क (वार्षिक)	रु. ५००/-

- * नयी शाखा खोलने के लिए मुख्यालय से लिखित अनुमति लेनी होगी।
- ☛ कृपया सदस्यता-शुल्क और शाखा-सम्बद्धता-शुल्क इंडियन पोस्टल आर्डर अथवा ऋषिकेश में स्थित किसी भी बैंक के नाम बने डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भेजें।
- ☛ सदस्यता ग्रहण करने, पत्रिका भेजने एवं दि. जी. सं. से सम्बन्धित अन्य विषयों के लिए कृपया पत्रिका-विभाग/शाखा-विभाग से सम्पर्क करें। फो.नं. ०१३५-२४४२३४०

सूचना श्री नवरात्र दुर्गा-पूजा

पवित्र दुर्गा-पूजा (नवरात्र देवी-पूजा) शिवानन्द आश्रम, शिवानन्दनगर में १९ से २७ सितम्बर २००९ तक मनायी जायेगी। गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी यह पूजा समयोचित शालीनता एवं समारोह के साथ सम्पन्न होगी। देवी माँ की नवरात्र पूजा के कार्यक्रम में शास्त्रीय पूजा, स्वाध्याय एवं देवीमाहात्म्य (दुर्गासप्तशती), ललितासहस्रनाम तथा देवी से सम्बन्धित अन्य ग्रन्थों का पाठ, सामूहिक प्रार्थना, नित्य कीर्तन, भजन, प्रवचन आदि सम्मिलित होंगे। देवी माँ की वेदी को नित्य ही अलंकारों एवं पुष्पों से सजाने तथा प्रकाश की व्यवस्था होगी। विजयादशमी के पूर्व-दिवस २७ सितम्बर २००९ को परम पवित्र चण्डी-हवन (होम), कुमारी-पूजा तथा समापन-पूजा उत्सव का परमोत्कृष्ट रूप लेंगे। २८ सितम्बर को पवित्र विजयादशमी मनायी जायेगी।

हम सभी भक्तों को इस पवित्र पूजा में उपस्थित एवं सम्मिलित होने का हार्दिक निमन्त्रण देते हैं। अपने आगमन की पूर्व-सूचना देने की कृपा करें। जो भक्त गण 'व्यवस्थापक, श्री विश्वनाथ मन्दिर, पत्रालय : शिवानन्दनगर २४९ १९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड' को पत्र द्वारा अपनी इच्छा व्यक्त करेंगे, उनके नाम से विशेष संकल्प के साथ पूजा की जायेगी।

आप सभी पर जगन्माता माँ की कृपा रहे!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

आराधना के अवसर पर विशेष छूट

१ मई २००९ से ३० सितम्बर २००९ तक

पुस्तकों पर छूट

३०० रु. तक की पुस्तकों के आर्डर पर २०%

१००० रु. तक की पुस्तकों के आर्डर पर ३०%

१००० रु. से अधिक की पुस्तकों के आर्डर पर ३५%

पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी और पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी की निम्नलिखित चित्रात्मक पुस्तकों पर ४०% विशेष छूट दी जायेगी।

(चित्रात्मक पुस्तकों पर यह छूट ३० सितम्बर या जब तक पुस्तकें उपलब्ध हैं, तब तक दी जायेगी।)

1. ES8	Glorious Vision	(A Pictorial Volume)	Rs. 650/-
2. ES4	Gurudev Sivananda	(A Pictorial Volume)	Rs. 250/-
3. EC70	Ultimate Journey	(A Pictorial Volume)	Rs. 500/-
4. EC71	Divine Vision	(A Pictorial Volume)	Rs. 300/-

सभी आर्डरों के साथ ५०% अग्रिम धन-राशि भेजें।

यह विशेष छूट केवल भारत में ही भेजने के लिए उपलब्ध है।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, द शिवानन्द पब्लिकेशन लीग

पोस्ट : शिवानन्दनगरहहह२४९१९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

फोन : (९१) ०१३५-२४३४७८०, २४३००४०; E-mail: bookstore@sivanandaonline.org

